''औपनिवेशिक ज्ञानकांड एवं शोषण तथा भारतीय राष्ट्रवाद''

विमल कुमार मौर्य

शोधार्थीः इतिहास विभाग

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

Email: vimalmauryaji@gmail.com

''सही अर्थों में राष्ट्रों का उदय मध्ययुग की समाप्ति पर हुआ।''

ई0एच0 कार

सारांश

ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने केवल भारतीय भू–भाग पर ही अपना आधिपत्य कायम नहीं किया अपितु उसने ज्ञान मीमांसा की पहले से चली आ रही परंपरा को भी अपदस्थ कर दिया। जिस कारण से भारत में राष्ट्रवाद के उदय और विकास को एक ऐतिहासिक जरूरत के रूप में देखा गया। स्मरणीय है कि ऐसा नहीं था कि भारत यूरोपीय शक्ति के आगमन से पहले राष्ट्र नहीं था परंतु यह बात जरूर माननी पड़ेगी कि भारत समकालीन स्वरूप में स्थापित राष्ट्र नहीं था। भारतीय राष्ट्रवाद की मुखर अभिव्यक्ति साम्राज्यवाद के शोषणकारी गतिविधियों के विरोध में पैदा हुई क्योंकि साम्राज्यवाद की खासियत होती है कि या अधीनस्थ देश के संसाधन का अंधाधुंध दोहन करता है तथा उपनिवेश का स्वाभाविक विकास नहीं होने देता ब्रिटिश शासन और उसके प्रत्यक्ष और परोक्ष परिणामों ने ही भारत में राष्ट्रवाद के विकास के लिए भौतिक, नैतिक और बौद्धिक परिस्थितियाँ तैयार की जिसके तहत जनमानस में राष्ट्रवादी चेतना का आविर्भाव हुआ भारतीय राष्ट्रवाद एक ''व्युत्पन्न संवाद'' के रूप में पश्चिम से भिन्न तरीके विकसित हुआ।

मुख्य शब्दः औपनिवेशिक ज्ञानकांड, भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण, आद्य राष्ट्रवादी आंदोलन, 1857 का स्वतंत्रता संघर्ष, आधुनिक राष्ट्रवादी आंदोलन, निष्कर्ष

प्रस्तावना

अपने स्वयं के इतिहास को निर्धारित करने में भारत की जनता को बौद्धिक शक्ति से वंचित मानने वाले साम्राज्यवादी अक्सर तर्क देते हैं कि भारतीय राष्ट्रवाद औपनिवेशिक शक्ति की उपज है जो आती महिमा मंडल का परिचायक है। ब्रिटिश काल में भारत में राष्ट्रवाद के उद्भव एवं बौद्धिक चेतना का विकास ब्रिटिश शासन के दौरान भारत में ले गए लोकप्रिय तथा अलोकप्रिय बदलावों का एवं शोषण का फलीभूत रूप कहा जा सकता है। भारत में राष्ट्रीय आंदोलन एवं राष्ट्रीय निर्माण की प्रक्रिया दोनों साथ–साथ चलती रही ब्रिटिश शासन के विरुद्ध सबसे आरंभिक विद्रोह जनजाति एवं किसानों के द्वारा किया गया जिसे आज राष्ट्रवादी आंदोलन के रूप में देख सकते हैं क्योंकि यह विद्रोह अशिक्षित लोगों ने किया था। जिन्हें उपनिवेशवाद की समझ अभी नहीं थी।

1857 ई0 के विद्रोह का फैलाव भारत के विभिन्न क्षेत्रों में हुआ जिसमें समाज के सभी तत्वों की भागीदारी रही थी पर भारत का शिक्षित मध्यवर्ग इससे पृथक रहा किंतु फिर भी इसे भारत के प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के रूप में संबोधित किया जाता है।

आधुनिक राष्ट्रवाद का विकास 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में समाज एवं धर्म सुधार आंदोलन के रूप में देखा जाता है क्योंकि यह आंदोलन शिक्षित भारतीयों द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर परस्पर सामाजिक सद्भाव कायम करने तथा भारत को दिशा देने के लिए, निश्चित विचारधारा को प्रोत्साहन देने के लिए था जिसके परिणाम स्वरुप भावी राष्ट्रीय आंदोलन की पृष्ठभूमि निर्मित हुई।

भारतीयों को आधुनिक राजनीति से परिचित कराने का श्रेय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को दिया जाता है भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को अभिजात्य चरण से जनसामान्य तक पहुंचाने का श्रेय गांधी जी को है।

औपनिवेशिक ज्ञानकांड : उपनिवेशवादी ज्ञान कांड का यह दलील रहा है कि एशियाई राष्ट्रवाद का उदय औद्योगिकरण, शहरीकरण और मुद्रण, पूंजीवाद से संभव हुआ जैसा कि **बेनेडिक्ट एंडरसन 1983** का कथन है कि अफ्रीका और एशियाई विकासशील जगत में राष्ट्रवाद पश्चिम में ही विकसित किसी एक या दूसरे प्रारूप का अनुकरण था[1]।

इस तरह वे इन महाद्वीपों की जनता का अपने किस्म के राष्ट्रवाद के विकास में कोई बौद्धिक योगदान नहीं मानते इस यूरोपीय श्रेष्ठता की काफी वैचारिक आलोचना हुई, उदाहरण के लिए शशि थरूर ने अपनी पुस्तक **''अंधकार काल''** के दूसरे अध्याय में बताया है की ''संपूर्ण भारतीय इतिहास में व्यवस्था के प्रत्येक काल के बाद केंद्रीकरण की इच्छा बलवती होती रही है और यदि अंग्रेजों ने अपेक्षाकृत बेहतर अर्थशास्त्र

के साथ भारत की व्यवस्था का पहले लाभ न उठा लिया होता तो संभव था की किसी भारतीय शासक ने वह कर लिया होता जो साम्राज्यवादियों में किया और अधिकांश उपमहाद्वीप पर अपना शासन स्थापित कर लिया होता।[2]

पार्थ चटर्जी (1993 ई0) का तर्क यह है कि अगर निमित्त कारण का निर्धारण तथा हमारे भविष्य का निश्चय पश्चिम ने किया और उपनिवेशी व्यवस्थाओं के विरुद्ध हमारे प्रतिरोध का रूप भी हमारी ओर से उसी ने सोचे तो फिर हमारे पास सोचने के लिए भला रहा क्या ? इसलिए उनका तर्क यह है कि सत्ता के लिए राजनीति संघर्ष के आरंभ में बहुत पहले ही भारतीय समाज एक निजी संस्कृति क्षेत्र में राष्ट्र की कल्पना करने लगा था, भले ही राज्य तब ब्रिटिशों के हाथों में था। इसी जगह उसने प्रभुसत्ता के अपने स्वयं के क्षेत्र के बारे में सोचा और ऐसी आधुनिकता को गढ़ा जो आधुनिक तों था पर पश्चात् नहीं।[3] अर्थात 19वीं सदी के आरंभिक वर्षों में स्वतंत्रता के लिए सांस्कृतिक निरूपण से भारतीय राष्ट्रवाद के कार्यकाल आपको का आरंभ हुआ।

भारतीय राष्ट्रवाद के उद्भव के कारक : आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद बुनियादी तौर पर विदेशी आधिपत्य की चुनौती के जवाब के रूप में उदित हुआ। उदाहरण के रूप में देखें तो **शशि थरूर** अमेरिकी इतिहासकार बिल दुरांत के कथन का उल्लेख अपनी किताब **''अंधकार काल''** में करते हुए लिखते हैं कि ब्रिटिश शासको की भारत पर विजय एक व्यापारिक कंपनी द्वारा एक महान सभ्यता पर आक्रमण और उसका विनाश था। इस कंपनी के पास ना कोई अंतरात्मा थी और ना कोई सिद्धांत, और तो और कोई मर्यादा या सलीका भी नहीं सिर्फ लोभ ही लोभ था। कुछ समय के लिए अवस्थित और असहाय हो गए देश को गोलियों और तलवारों से कुचला गया। रिश्वतखोरी और हत्या, चोरी और कब्जा करके अवैध और वैद्य लूटपाट की ऐसी शुरुआत जो 173 वर्षों से **1930 ई0** अब तक जारी है।[4]

औपनिवेशिक भारत में शिक्षा के तीव्र प्रसार रेल और तार समाचार पत्र जैसी संचार व्यवस्थाओं के विकास तथा उपनिवेश संस्थाओं के कारण उत्पन्न सार्वजनिक कर्म क्षेत्र का धीर.धीरे राजनीतिक एकता का आधुनिक स्वरूप सामने आया जो पश्चिमी आधुनिकता से भिन्न था। नस्ली भेदभाव तथा भारतीयों का ईसाईयत में धर्मांतरण एवं बेंथमवादी प्रशासकों के सुधारवादी उत्साह ने पढ़े–लिखे भारतवासियों को विवश कर दिया कि वें ठहरकर अपनी स्वयं की संस्कृति पर नजर डालें। जिनका उद्देश्य भारतीय संस्कृति में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त कर परिष्कृत करना ताकि वह बुद्धिवाद, अनुभववाद, एकेश्वरवाद और व्यक्तिवाद के यूरोपीय आदर्शों से मेल खाएं।[5] जिसके पीछे युग निर्माताओं का मंसूबा यह दिखाना की भारतीय सभ्यता किसी भी तरह पश्चिम से कम नहीं है। इस विदेशी शासन के खिलाफ भारत के परंपरागत संघर्ष के रूप में हुई यह संघर्ष कोई अकस्मात आया उबाल नहीं था प्रत्युत यह जनता के

संघर्ष की पराकाष्ठा थी जो 1757 में ब्रिटिश राज की शुरुआत के बाद से ही सुगबुगाने लगा था। और यही सुगबुगाहट धीरे–धीरे फैलती और बढ़ती गई।[6] विदेशी शासन द्वारा भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज के औपनिवेशीकरण और उसे दबाए रखने का शोषण करने की प्रवृत्तियों के कारण आधुनिक परंतु पश्चिम सें भिन्न सार्वभौमिक राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।

आद्य राष्ट्रवादी आंदोलन : बरतानवी शासन के विरुद्ध आरंभिक प्रतिक्रिया जनजाति और किसान आंदोलन के रूप में व्यक्त हुई अर्थात ब्रिटिश शासन के विरोध में संघर्ष करने वाले तथा कथित असभ्य और अशिक्षित लोग थे। **के0 एस0 सिंह** ''जनजाति आंदोलन'' में सामुदायिक चेतना की खोज करते हुए कहते हैं कि कृषक आंदोलन कृषि से संबंधित होते थे जबकि जनजातीय विद्रोह आदिवासियों के जमीन तथा जंगल दोनों से जुड़े होने के कारण कृषि तथा वन दोनों पर आधारित थे। इन विद्रोहों में नृजातीय कारक महत्वपूर्ण थे। उनके अनुसार ''जनजाति विद्रोह'' जमीदारों, साहूकारों और सरकारी अफसर के विरुद्ध केवल इसलिए नहीं होते थे कि वह उनका शोषण करते थे बल्कि इसलिए होते थे क्योंकि वें उनकी सदियों पुरानी परंपरागत जीवन शैली, उनकी संस्कृति सामाजिक संरचना, रीति–रिवाज, संस्कार, मूल्य एवं प्रथाओं में हस्तक्षेप किये और दूसरी सबसे महत्वपूर्ण बात वह बाहरी व्यक्ति थे।[7]

विपिन चंद्र अपनी पुस्तक **''भारत का स्वतंत्रता संघर्ष''** में लिखते हैं की औपनिवेशिक घुसपैठ और व्यापारियों, महाजनों व लगान उगाहने वालों के तिहरे शासन ने पूरे आदिवासी समाज व्यवस्था को तोड़ दिया हालांकि यह हमला कहीं बहुत तगड़ा रहा कहीं थोड़ा कम असर का यहां तक कि उनके कबीलाई सरदार और मुखिया औपनिवेशिक शोषण से बच नहीं सके जिस कारण से आम आदिवासियों के साथ उनके सरदार और मुखिया भी औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध एकजुट हुए। उन्होंने वर्ग के आधार पर नहीं बल्कि जातीय आधार पर और आदिवासी पहचान जैसे संथाल, कोल, मुंडा, रंपा आदि के रूप में अपने आप को संगठित किया। उन्होंने कभी भी एक दूसरे आदिवासियों पर हमला नहीं किया। आदिवासी लोग इस हद तक संगठित थे कि कई बार कई आदिवासी क्षेत्र में एक ही समय पर बाहरी लोगों के खिलाफ विद्रोह हुआ।[8]

अंग्रेजों ने औपनिवेशिक शोषण का कहर भारतीय किसानों पर सबसे ज्यादा बरपा। **ए0 आर0 देसाई** अपनी पुस्तक **''भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि''** में लिखते हैं कि अंग्रेजो के भारत विजय के बाद पुरानी व्यवस्था में अमोल परिवर्तन का सिलसिला शुरू हुआ। नहीं भू–राजस्व व्यवस्था ने गांव की जमीन पर लोगों की जमाने से चली आ रही मिलकियत खत्म कर दी।[9] **शेखर बंदोपाध्याय** लिखते हैं कि भारतीय समाज के कुलीन जब पश्चिम की नैतिक समालोचनाओं का जवाब देने के लिए अपने समाज को अंदर से बदलने हेतु सामाजिक सुधारो में लगे थे तब ग्रामीण कृषक समाज उपनिवेशी शोषण का जवाब

एक बिल्कुल अलग ढंग से दे रहा था। ब्रिटिश राज की पहली सदी के दौरान सबसे पहले विद्रोहों का एक सिलसिला देखा जा सकता है, जिनको **कैथलीन गफ** नें ''पुनः प्रतिष्ठा विद्रोह'' कहा है। इसका कारण है कि इनका आरंभ असंतुष्ट स्थानीय शासको, मुगल अधिकारियों और संपत्ति से वंचित जमीदारों ने किया।

उनका समर्थन किसानों ने किया जिनका उद्देश्य खेतिहर संबंधों को बहाल करना।[10] विभिन्न किसान विद्रोहों में जो खास बात थी वह थी बिना वर्ग संप्रदाय का विचार किया सामूहिक रूप से संगठित हो औपनिवेशिक भू–नीति के खिलाफ संघर्ष चाहे सन्यासी विद्रोह, चुआर विद्रोह, फकीर विद्रोह, नील विद्रोह, रंगपुर किसान विद्रोह आदि हो। इन सभी विद्रोहों की उभयनिष्ठ बात जो दिखाई देती है वह है आद्य राष्ट्रवादी क्षेत्रीय एकजुटता।

1857 ई0 का विद्रोह : सामाजिक आर्थिक धार्मिक सांस्कृतिक प्रशासनिक और संतोष के कारण 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम हुआ **ताराचंद** अपनी किताब **''भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास'' (खंड 2)** में लिखते हैं कि कैनिंग ने एक बार अपनी भाषा में 1857 की क्रांति के पूर्व संध्या पर कहा था कि हमें नहीं बोलना चाहिए कि भारत के आकाश में यद्यपि वह इस समय बिल्कुल शांत है, एक छोटा सा बादल जो मुठ्ठी से बड़ा ना हो, उठ सकता है पर जो बढ़ कर हमारा सर्वनाश कर सकता है।[11] **जस्टिन मेकार्थी** ने लिखा अपनी पुस्तक **''ए शार्ट हिस्ट्री आफ आवर ओंन टाइम्स''** में कि तथ्य यह है कि भारत महादेश के उत्तर तथा पश्चिम के अधिकांश भाग में देसी जातियों में अंग्रेज शक्ति के विरुद्ध विद्रोह किया था। किसी भी हालत में या महज एक सैनिक विद्रोह नहीं था। इसने सैनिकों की शिकायत के साथ भारत पर अंग्रेजों के कब्जे के विरुद्ध राष्ट्रीय क्षोभ और धर्मांधता भी मिल गई थी। इसमें देसी राजा और देसी सैनिक शामिल थे। मुसलमान और हिंदू अपने पुराने धार्मिक विरोधों को बुलाकर ईसाइयों के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे।[12] इस बार में कोई संदेह नहीं रह जाता कि विद्रोह बहुत व्यापक था। परंतु शिक्षित मध्यम वर्ग इस विद्रोह में शामिल नहीं था। जिस कारण से राष्ट्रीय विद्रोह का सकते हैं पर आधुनिक राष्ट्रवाद नहीं।

आधुनिक राष्ट्रवादी आंदोलन : यद्यपि सैद्धांतिक रूप से इसका विकास पुनर्जागरण काल से प्रारंभ माना जा सकता है, परंतु भारतीयों को आधुनिक राजनीति से मुखातिक कराने की उपलब्धि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को दिया जाता है हालांकि कांग्रेस से पूर्व भी अनेक राजनीतिक संगठन भारत में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से महत्वपूर्ण किरदार निभाए, यह संस्थाएं थी – लैंड होल्डर समिति, ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन, मद्रास नेटिव एसोसिएशन, बाम्बे संगठन इत्यादि प्रमुख है।[13] 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना निम्नलिखित तीन मुख्य उद्देश्यों के साथ होती है।

1ण देश के विभिन्न भागों में राष्ट्रवादी राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित तथा मजबूत करना।

2ण जाति धर्म प्रांत का भेद किए बिना राष्ट्रीय एकता की भावना को विकसित तथा मजबूत करना ।

3ण जनप्रिय मांगों का निरूपण तथा उन्हें सरकार के सामने रखना और सबसे महत्वपूर्ण यह कि देश में जनमत को प्रशिक्षित और संगठित करना।[14]

इस प्रकार कांग्रेस भारत की राजनीतिक नेतृत्व करने वाली प्रमुख संस्था बन गई परंतु इस काल में राष्ट्रीय आंदोलन दो विभिन्न धाराओं में बटकर चलती रही एक धारा अभिजन की रही तो एक जन सामान्य की, कांग्रेस को हम उदारवादी और उग्रवादी चरण में विभाजित कर जब देखते हैं तो दिखाई पड़ता है कि जहां उदारवादी राष्ट्रवाद की प्रेरणा पश्चिमी तर्कों से पाते थे वहीं उग्रवादी इसकी जड़ भारतीय धर्म एवं संस्कृति में खोजने का प्रयास कर रहे थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को अभिजन चरित्र से जनसामान्य रूप में बदलने की ख्याति गांधी को प्राप्त है।[15] गांधी और अन्य प्रमुख नेताओं के प्रयासों के भारतीय राष्ट्रवाद समावेशीकरण की दिशा में आगे बड़ा। परंतु गांधी सिंथेसिस के प्रयासों के बावजूद भी भारतीय राष्ट्रवाद का झुकाव कहीं ना कहीं सवर्णों की ओर बना रहा था लेकिन यही समय था जब दलित वर्ग के नेता श्री नारायण गुरु, अंबेडकर, पेरियार, नायकर आदि नेतृत्व संभाला और सामाजिक मुद्दों को उठाया। इसी दौर में श्रीमती एनी बेसेंट, ताराबाई शिंदे, सरोजिनी नायडू जैसी महिला नेताओं ने महिला अधिकार के विषय को उठाया। स्पष्ट है कि अब राष्ट्रीय आंदोलन का लक्ष्य राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ सामाजिक स्वतंत्रता भी अनिवार्य विषय के रूप में स्थापित हुआ। 1920 से 1930 के दशक में समाजवादी एवं वामपंथी पार्टियां सक्रिय हुई जिन्होंने श्रमिक वर्ग को भी राष्ट्रीय आंदोलन के मुख्य धारा से जोड़ा और आर्थिक स्वतंत्रता के लक्ष्य को भी शामिल कर दिया। जिससे ऐतिहासिक भारतीय राष्ट्रवाद और अधिक सार्वभौमिक एवं समावेशी हो गया।[16]

''राष्ट्र से राज्य या राष्ट्रवाद नहीं बनता बल्कि राज्य से राष्ट्र और राष्ट्रवाद निकलता है।''[17]

ई0जे0 हॉब्सबांम

निष्कर्ष :

राष्ट्रवाद एक अनुभूति है जो समूह के गौरव के साथ व्यक्ति को भावात्मक एकता के साथ जोड़ती है, भारत में पांडुलिपि काल से ''राष्ट्र'' शब्द उल्लेखित किए जाते रहे थे पर औपनिवेशिक ज्ञानकांड ने पश्चिमी आधुनिक राष्ट्रीयता के आधार पर भारतीय ज्ञान मीमांसा की चली आ रही परंपरा को अबदस्थ कर एक सशक्त चुनौती प्रस्तुत की और तर्क गढ़ा की भारत बहुसांस्कृतिक, बहुधार्मिक और भाषायी

विविधता के कारण कभी राष्ट्र नहीं बन सकता इस औपनिवेशिक ज्ञानकांड और यूरोपीय श्रेष्ठता के प्रत्युत्तर एवं ब्रिटिश शोषण के फलस्वरुप उपजा भारतीय राष्ट्रवाद ऐसी संरचना का निर्माण राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान किया, जिसने लोकतंत्र और पंथनिरपेक्षता तथा आजादी और अंत्योदय को अपना आदर्श बनाया।

इस प्रकार स्वतंत्रता आंदोलन का दोहरा परिणाम हुआ भारत की आजादी एवं राष्ट्र निर्माण, अगर एक तरह से देखा जाए तो आजाद भारत की आर्थिक, सामाजिक एवं संवैधानिक दृष्टि राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान ही निर्मित हो गई थी।

सन्दर्भ सूची

[1] एंडरसने, बेनेडिक्ट, इमैजिन्ड कम्युनिटीज : ''रिफ्लेक्शन्स ऑन द ओरिजिन एण्ड स्प्रेड ऑफ नेशनलिज्म'' वर्सो, लन्दन 1983,

[2] थरूर शशि, ''अन्धकार काल भारत में ब्रिटिस साम्राज्य'' सम्पाः युगांक धीर, कणी प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली, 2020 पृ. 84,

[3] पार्थ, चटर्जी, द नेशन एण्ड इट्स फ्रैगमेंटम : कोलोनियल एण्ड पोस्ट–कोलोनियल हिस्ट्रीज़, प्रिंसटन युनिवर्सिटी प्रेम, प्रिंसटन 1993 पृ. 5–7,

[4] थरूर, शशि (2020) पूर्वोक्त, पृ. 36,

[5] बंधोपाध्याय शेखर, ''पलासी से विभाजन तक और उसके बाद'' ओरिएंट ब्लैकस्वांन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली (2022) पृ. 206,

[6] चन्द्र, विपिन, ''भारत का स्वतंत्रता संघर्ष'' हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय (2015) पृ. 11,

[7] सिंह, अभय प्रसाद, ''भारत में राष्ट्रवाद ओरियंट ब्लैकस्तान प्राइवेट लि0 (2014) पृ. 170,

[8] चन्द्र, विपिन 2015 पूर्वोक्त पृ. 17,

[9] देसाई, ए आर, ''भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि'' ट्रिनिटी प्रेस लखनऊ (2017) पृ.31,

[10] बंधोपाध्याय, शेखर 2022 पूर्वोक्त पृ. 158–159,

[11] चन्द्र, तारा, ''भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास'' खण्ड 2, प्रकाशन विभाग एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार् 2022 पृ.37,

[12] जस्टिन मैकार्थी, ''ए शार्ट हिस्ट्री ऑफ आवर ओन टाइम्स'' लन्दन। 1883 पृ.170,

[13] बंधोपाध्याय, शेखर, पलाजी से विभाजन तक और उनके बाद, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली 2016 पृ.214,

[14] चुन्द्र, विपिन, आधुनिक भारत का इतिहासए ओरियंट बैंक स्वान और अभय प्र0 लि0 नई दिल्ली, 2020 पृ. 201–213,

[15] विपिन चन्द्र 2015 पूर्वोक्त – पृ. 45–53,

[16] सिंह, अभय प्रसाद 2014 पूर्वोपन पृ. 143–158,

[17] हॉब्सबॉम, ई0जे0 नेशंस एण्ड नेशनलिज्म सिन्स 1780,1990 पृ.10,